प्राकृत भाषा एवं साहित्य

(11 वीं कक्षा)

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संयोजक एवं लेखक
प्रो. उदय चन्द्र जैन
(सेवानिवृत्त)
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
मोहनलाल सु.खाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर

लेखक
प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन
अध्यक्ष
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
मोहनलाल सु.खाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर

लेखक
प्रो. पी. सी. जैन
(सेवानिवृत्त)
जैनविद्या अनुशीलन केन्द्र
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

भूमिका

भारतीय वाङ्.मय में सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा धार्मिक तत्त्वों के गूढतम रहस्य छिपे हुए हैं। हमारे ऋषियों, महर्षियों, आचार्यों की सद्वाणी से आप्लावित यह वाङ्.मय भारत की धरोहर के रूप में जाना जाता है। इस साहित्य का लेखन आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व प्रारम्भ हो गया था। संस्कृत भाषा में वेद, आगम, उपनिषद् बाह्मण, अरण्यक आदि साहित्य का लेखन हुआ तथा प्राकृत भाषा में जैनागम, मूलसूत्र, व्याख्या साहित्य, शिलालेख, काव्य, नाटक आदि विधाएँ प्राप्त होती हैं। अतः यह कहना कोई अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का प्रयोग अतिप्राचीन काल से ही हमारे देश में होता रहा है।

भाषा–विकास–काल की दृष्टि से देखें तो विश्व की समस्त भाषाओं के भेदक्रम में भारतीय आर्यभाषा परिवार के अर्न्तगत संस्कृत एवं प्राकृत दोनों ही भाषाओं का अस्तित्त्व है। ईसा की छठी शताब्दी पूर्व से लेकर लगभग दसवीं/बारहवीं शताब्दी तक का समय प्राकृत भाषा एवं साहित्य के लेखन का काल माना जाता है। इस युग में प्राकृत साहित्य विविध विधाओं में लिखा गया। लेकिन इससे पहले से ही वैदिक काल तथा उससे भी पूर्व से लेकर प्राकृत भाषा का प्रयोग निरन्तर बोलचाल के रूप में होता रहा है। इसके प्रमाण हमें वेदों में प्राप्त होते हैं। ऐसी कोई भी विधा नहीं नहीं होगी, जिसमें प्राकृत साहित्य लिखा नहीं गया हो।

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान शिक्षा मण्डल, अजमेर के प्राकृत भाषा एवं साहित्य के 11 वीं कक्षा के छात्र–छात्राओं के लिए तैयार की गई है, जिसमें उन्हें प्राकृत भाषा, साहित्य, व्याकरण, वाक्य–बोध के प्रति मार्ग–दर्शन दिया गया है तथा स्वयं शिक्षक के रूप में भी यह पुस्तक उन्हें कारगर साबित होगी, हम ऐसी कामना करते हैं। प्राकृत भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय छात्र–छात्राओं को हो सके, इसी उद्देश्य से यह पुस्तक तैयार की गई है।

– संयोजक एवं लेखकगण

अनुक्रमणिका

भूमिका

प्रकाशकीय

		पृष्ठ
1.	**अपठित**	**01–15**
2.	**रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन**	**16–19**
(I)	पठित प्राकृत सूक्तियों अथवा सुभाषितों का 50 से 60 शब्दों में प्राकृत में विशदीकरण	17
(II)	पाँच हिन्दी अथवा अंग्रेजी वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद	18
(III)	पाँच प्राकृत के वाक्यों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद	19
3.	**व्यावहारिक व्याकरण**	**20–85**
(I)	प्राकृत शब्द रूप सभी विभक्तियों में : **पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग**	21
(II)	प्राकृत क्रिया प्रकरण (रूप तीनों कालों में एवं आज्ञा, विधि में) एवं विशेषण ज्ञान	36
(III)	पूर्व पठित तथा अन्य क्रियाओं के वर्तमान, भूतकाल, भविष्यत्काल एवं आज्ञा के रूप एवं संधि व समास के प्रयोग	48
(IV)	प्राकृत के प्रमुख अव्ययों का परिचय एवं कर्मणि प्रयोग	55
(V)	सर्वनामों का प्रयोग ज्ञान	58
(VI)	प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय एवं भेद–प्रभेद	63
4.	**(क) प्राकृत गद्य पाठ (पाठ्य पुस्तक प्राकृत गद्य सोपान)**	**86–107**
1.	लोहस्स न अंतो (उत्तराध्ययनटीका)	87
2.	मेरुपभस्स हत्थिणो अणुकंपा (ज्ञाताधर्मकथा)	91
3.	अग्गिसम्मस्स पराहवो (समराइच्चकहा)	96
4.	धणदेवस्य पुरिसत्थं (कुवलयमालाकहा)	102
5.	जहा गुरु तहा सीसो (रयणचूडरायचरियं)	106
	(ख) प्राकृत पद्य पाठ (पाठ्य पुस्तक प्राकृत काव्य मंजरी)	**108–155**
1.	कुमाराण बुद्धि परिक्खणं (अभयक्खाणयं)	109
2.	सहलं मणुजम्मं (कुम्मापुत्तचरियम्)	115
3.	कुसलो पुत्तो (आख्यानमणिकोश)	121
4.	साहसी अगडदत्तो (प्राकृत कथा संग्रह)	127
5.	अहिंसओ बाहुबली (पउमचरियं)	133
6.	जीवन मुल्लं (वज्जालग्गं में जीवनमूल्य)	138
7.	जीवण ववहारो (अर्हत्प्रवचन)	144
8.	रत्नत्रय अधिकार (प्रथम अधिकार) (कुन्दकुन्द का कुन्दन)	150

पाठ्यक्रम

प्राकृत भाषा

समय 3.15 घण्टे **पूर्णांक–100**

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित	10
रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन	30
व्यावहारिक व्याकरण	35
पाठ्य पुस्तक	25

1. अपठित गद्यांश **10**

अपठित गद्यांश/गाथाओं के अंश की 50 से 60 शब्दों में व्याख्या (प्राकृत में)

2. रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन **30**

(I) पठित प्राकृत सूक्तियों अथवा सुभाषितों का 50 से 60 शब्दों में प्राकृत में विशदीकरण 10

(II) पाँच हिन्दी अथवा अंग्रेजी वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद 10

(III) पाँच प्राकृत के वाक्यों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद 10

3. व्यावहारिक व्याकरण **35**

(I) निम्नलिखित प्राकृत शब्द रूप सभी विभक्तियों में : 03

पुल्लिंग : बाल, पुरिस, छत्त, सीस, णर, निव, सुधि, कवि,
मुणि, भाणु, सिसु, साहु, पिउ, गुरु एवं तरु।

स्त्रीलिंग : बाला, माला, सरिआ, कन्ना, निसा, जुवई, रई,
साड़ी, इत्थी, दासी, बहु, धेणु, विज्जु, महु, सासू।

नपुंसकलिंग : णयर, फल, पु प, कमल, कम्म, धण, मित्त, वारि, दाहि, वत्थु एवं महु।

(II) निम्नलिखित प्राकृत क्रिया रूप तीनों कालों में एवं आज्ञा, विधि मे : 03
भण, जाण, इच्छा, पिव, गच्छ, खेल, हस, पढ़, लेह, सुण,
भुंज, णच्च, दा, णे, हो एवं अस।

(III) पूर्व पठित तथा निम्नलिखित क्रियाओं के वर्तमान, 03
भूतकाल, भविष्यत्काल एवं आज्ञा के रूप में :

(क) पास, धाव, णम, चिंत, चल, भम, जय, सेव, भण, पेस, कंद, कीण, पाल,
सीख, गज्ज, पस्स, कड्ढ, छिन्न, दह, सोह, पड एवं उट्ठ।

(ख) पूर्व पठित तथा निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के सभी विभक्तियों के रूप :03
पुल्लिंग : बुह, सीअ, मिअ, मोर, जीव, कुलवइ, हत्थि, जागि, नाणि, पक्खि, मंति,
रिउ, जन्तु, पसु एवं भिक्खु।

स्त्रीलिंग : सुण्हा भारिआ, दिसा, गिरा, सई कुमारी, बहिणी,

तरुणी, असी, अंगुली, चंचु, गउ, रज्जु।

नपुसंकलिंगः घर, खेत, सत्थ, सर, सुह, दुह, नयण, अट्ठि, अक्ख, अंसु।

(ग) निम्नांकित कृदन्त रूपों एवं विशेषणों का प्रयोग ज्ञान : 3

(तु, ऊण, अव्व, न्त, माण, अणीअ, स्स अ, त्त, त्तण, इल्ल प्रत्ययों से बनने वाले कृदन्त रूप) 3

(घ) कर्मणि प्रयोग ज्ञान 3

(ङ) संधि एवं समासों का प्रयोग ज्ञान 2

(IV) प्राकृत के प्रमुख अव्ययों का परिचय तथा ''इज्ज'' से बनने वाले सामान्य कर्मणि प्रयोग 3

(V) सर्वनामों का प्रयोग ज्ञान : अम्ह, तुम्ह, त, क, ज, इम 2

(VI) प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय एवं प्राकृत के प्रमुख भेदो 10

4. पाठ्य पुस्तक **25**

निम्नांकित पाठ्य सामग्री पर सामान्य प्रश्न दिये जायेंगे, जिनके उत्तर हिन्दी या अंग्रेजी में देना है।

निर्धारित प्राकृत गद्य पाठ (पाठ्य पुस्तक प्राकृत गद्य सोपान) **10**

1. लोहस्स न अंतो (उत्तराध्ययनटीका)
2. मेरुपभस्स हत्थिणो अणुकंपा (ज्ञाताधर्मकथा)
3. अग्गिसम्मस्स पराहवो (समराइच्चकहा)
4. धणदेवस्य पुरिसत्थं (कुवलयमालाकहा)
5. जहा गुरु तहा सीसो (रयणचूडरायचरियं)

निर्धारित प्राकृत पद्य पाठ (पाठ्य पुस्तक प्राकृत काव्य मंजरी) **15**

1. कुमाराण बुद्धि परिक्खणं (अभयक्खाणयं)
2. सहलं मणुजम्मं (कुम्मापुत्तचरियं)
3. कुसलो पुत्तो (आख्यानमणिकोश)
4. साहसी अगडदत्तो (प्राकृत कथा संग्रह)
5. अहिंसओ बाहुबली (पउमचरियं)
6. जीवन मुल्लं (वज्जालग्गं में जीवनमूल्य)
7. जीवण ववहारो (अर्हत्प्रवचन)
8. रत्नत्रय अधिकार (प्रथम अधिकार) (कुन्दकुन्द का कुन्दन)

निर्धारित संदर्भ पुस्तकें–

1. प्राकृत काव्यमंजरी (पाठ 1 से 10, 13, 15, 21, 22, 24, 26 एवं 29)

   प्रकाशक : प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (1962)
2. प्राकृत मार्गोपदेशिका, पं. बेचरदास, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
3. प्राकृत प्रबोध– डॉ. नेमीचन्द शास्त्री, चौखम्भा विद्या प्रकाशन, वाराणसी

4. प्राकृत काव्य सौरभ–तारक गुरु ग्रन्थालय, उदयपुर
5. कुन्दकुन्द का कुन्दन–श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान वीरोदय नगर, सांगानेर, जयपुर
6. प्राकृत गद्य सोपान (पाठ नं. 1, 2, 3, 4, 6, 8, 15, 18, 21, 24 एवं 26)
   प्रकाशक : प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (1983)
7. सरल प्राकृत व्याकरण – डॉ. राजा राम जैन, प्राच्य भारती प्रकाशन, आरा
8. प्राकृत वाक्य रचना बोध – युवावार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं
9. प्राकृत स्वयं शिक्षक – प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (1982)
10. प्राकृत रचनोदय – न्यू भारतीय पुस्तक प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली (2013)